नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर में पंचम दीक्षांत समारोह – 2019 का आयोजन

आज युवा उपाधि प्राप्त कर कंधों में नवीन जिम्मेदारियों के साथ जीवन में प्रवेश कर रहे हैं डॉ. श्रीवास्तव जबलपुर। ''आप स्वयं दीपक की तरह रहें एवं अपने अंदर की आवाज पहचानें। आगे बढ़ें अपनी ऑख, एवं कान खुले रखें, कल का काम आज करें एवं आज का अभी करें। आज आप उपाधि प्राप्त कर अपने कंधों पर नवीन जिम्मेदारियों के साथ नये जीवन में प्रवेश कर रहे है।'' उपरोक्त आशय के उद्‌गार आज नानाजी देशमुख चिकित्सा विज्ञान विश्व विद्यालय के पंचम दीक्षांत समारोह में दीक्षांत भाषण देते हुये कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के पंचम दीक्षांत समारोह में दीक्षांत भाषण देते हुये कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के अध्यक्ष एवं भारतीय डेयरी अनुसंधान संस्था करनाल के पूर्व निदेशक डॉ. ए.के. श्रीवास्तव ने व्यक्त किये।

उन्होनें कहा कि देश की 68 प्रतिशत जनंसख्या युवा है जो 35 वर्ष से कम उम्र की है। आज उन्ही के कन्धों देश को स्वर्णिम काल में ले जाने की जिम्मेदारी है। हमारा देश जो कभी कम अनाज एवं कम दुग्ध उत्पादक देशों की श्रेणी आता था, आज हम दुग्ध उत्पादन में नं. 1 पर है एवं अधिकतम अनाज उत्पादन कर दूसरे देशों की भी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहें है।

डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि अब हमें भविष्य के बारे में सोचना है क्योंकि जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है तथा कृषि भूमि धीरे–धीरे कम हो रही है इसके कारण आहार की कमी का सामना करना पड़ सकता है। जिसकी पूर्ति हेतु दूध, अण्डे, मांस, मछली आदि का उत्पादन बढ़ाना होगा। हमारे देश में दुधारी पशुओं की संख्या पर्याप्त है परन्तु प्रति पशु उत्पादन कम है।

उन्होनें कहा प्रति पशु दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु अधिक प्रयास करने होंगे जिस हेतु अगले 10–15 वर्षो की कार्य योजना तैयार करनी होगी। हमें यह भी देखना होगा कि पशुओं में बीमारियां होने से मानव में भी बीमारियां हो जाती है। ऐसी स्थिति में हमें दुधारी पशुओं होने वाली बीमारियां जैसे सब–क्लीनीकल मेसटाइटिस का नियंत्रण, मादा में गर्मी के लक्षणों की त्वरित पहचान, निर्धारित उम्र में पशु का गर्मधारण करना, कम उत्पादन वाली मादा पशुओं में सेक्सड वीर्य द्वारा अधिक उत्पादन वाले सांड़ो से प्रजनन आदि शामिल है।

अपने दीक्षांत उद्‌बोधन का समापन करते हुए उन्होनें कहा कि कृषि के साथ इन्ही बिन्दुओं को ध्यान में अधिकतम उत्पादन प्राप्त कर देश की आवाश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। उन्होनें सभी उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों को बधाईयां एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की।

विलुप्त प्रजातियों का सरक्षंण एवं योजनाओं को गति प्रदान करना ही वि.वि. का मुख्य लक्ष्य– डॉ. जुयाल अपने स्वागत भाषण में वि.वि. के कुलपति डॉ. प्रयाग दत्त जुयाल ने वि.वि. स्थापनाकाल से अभी तक की प्रगति प्रतिवेदन करते हुए कहा कि वि.वि. के अधीन संचालित महाविद्यालय विश्वविद्यालय 70 साल पूर्ण कर चुके है जिनके छात्र देश के विभिन्न अंचलों में बड़े पदों पर कार्यरत है यह वि.वि. के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियां है। उन्होनें मत्स्य विज्ञान स्थापना के साथ ही अनेक परियोजनाओं की स्वीकृति एवं गतिपूर्णता किये जा रहे कार्यो की विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुये विलुप्त होती जा रही अनेक प्रजातियों के सरक्षंण एवं गुणवत्ता को बनाये रखने का ही मुख्य लक्ष्य बताते हुये कहा कि हमारे छात्र राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धियां हासिल कर रहे है।

पशुधन के विकास बिना ग्रामीणजनों का विकास संभव नहीं– डॉ. जुयाल ने दुग्ध, अण्डा, मछली, मांस उत्पादन के क्षेत्र की चर्चा करते हुये बताया कि हमारे पशुपालकों को तकनीकि ज्ञान उपलब्ध कराने हेतु आदिवासी किसान छात्रावास की स्वीकृति प्राप्त हुई है जहां किसान ठहरकर प्रशिक्षण प्राप्त करगें उन्होनें डेयरी सांइस एवं फूड टेक्नोलॉजी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय की स्वीकृति की जानकारी देते हुये बताया कि महू में कन्या छात्रावास, केन्द्रीय लेबोरेटरी एनीमल हाउस का निर्माण, स्तम्भ कोशिका द्वारा हड्डियों को जोड़ने का प्रयोग, सुपर ओवुलोसन एवं एमब्राया टांस्फर टेक्नोलॉजी द्वारा स्वस्थ साहीवाल बछिया का जन्म, पंचगव्य उत्पादों का निर्माण, नर्मदानिधी कुक्कुट प्रजाति का विकास पशुओं के कृत्रिम पैर का निर्माण, औषधीय वाटिका के निर्माण के साथ ही वि.वि. का विभिन्न संस्थानों एवं वि.वि. के साथ एम. ओ.यू., एम.ओ.ए. सहित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी।

शिक्षा आर्थिक विकास की आधार शिला – राज्यपाल श्रीमति आनंदी बेन पटेल

शिक्षा आर्थिक विकास की आधार शिला है, वैज्ञानिक शोधों ने विश्व का चित्र बदल दिया है औद्योगिक क्रांति व हरित क्रांति से उत्पादन कई गुना बढ़ा है। ''उपरोक्त आशय के विचार म.प्र. की राज्यपाल एवं विश्वविद्यालयों की कुलाधिपति श्रीमती आनंदी बेन पटेल ने आज नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्व विद्यालय जबलपुर के पंचम दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से बोल रही थी।

उन्होंने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति ने विश्व के सभी लोगों को एक–दूसरे के निकट ला दिया है। जिससे रोजगार बढ़ा है तथा अनेक लोगों का जीवन स्तर भी सुधरा है। उन्होंने बताया कि भारत में श्वेत क्रांति के फलस्वरूप दुग्ध उत्पादन में हमारा देश प्रथम स्थान पर पहुँच गया है और मछली पालन, मुर्गी पालन में भी विश्व के प्रथम पांच देशों में हमने स्थान बनाया है। आपने अभी कहा कि ज्ञान, संस्कार और परिश्रम के परिणाम स्वरूप जिस उपाधि से आप आज अलंकृत हुए है, वह सुख समृद्धि और सफलता की हर सीढ़ी पर आपके साथ परछाई की तरह चलेगी। अतः आपकी सोच और चिंतन सदैव मानव समाज के उत्थान की दिशा में होना चाहिये। पशुचिकित्सक के रूप में अपने ज्ञान एवं सूझबूझ से पशुपालकों तथा ग्रामीण जनों को स्वावलंबी बनाने में आपकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, मुख्य अतिथि श्री श्रीमती आनंदी बेन पटेल ने दीक्षांत समारोह को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्राकृतिक संपदा का संवर्धन आज की महती आवाश्यकता है, इसके लिये प्राकृति संसाधनों के साथ–साथ वन्य जीवों का सरंक्षण भी आवश्यक है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, कि वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में यह विश्वविद्यालय अपनी सेवायें, प्रदेश तथा देश के अन्य प्रदेशों को प्रदान कर रहा है। उन्होनें प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि विश्वविद्यालय को प्रथम पेटेन्ट भारत सरकार की बौद्धिक संपदा विभाग द्वारा प्रदान किया गया है जिसके अंर्तगत क्लोनिंग प्रक्रिया के सरलीकरण हेतु माईक्रोटूल एवं माइको फ्यूजन सिस्टिम विकसित किया गया है। उन्होनें कहा वि.वि. द्वारा गौवंश के गोमय एंव गौमूत्र का उपयोग कर पर्यावरण स्वच्छता में भी योगदान दिया जा रहा है। देशी गाय के गौमूत्र से पंचगव्य तत्वों के उपयोग से मच्छर मार अगरबत्ती, हवन टिकिया, गोबर लकड़ी एवं औषधियों का उत्पादन भी किया जा रहा है। श्रीमति पटेल ने कहा म.प्र. भारत का ऐसा प्रदेश है, जहां देशी गौवंश की संख्या सर्वाधिक है। तथा भैसों की संख्या भी वृद्धि की ओर अग्रसर है दुधारू पशुओं की देशी नस्लों का पालन क्षेत्रीय जलवायु तथा पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल है, उन्होनें आज उपाधि प्राप्त युवाओं को अपने दायित्व और कर्तव्यों का बोध कराते हुये कहा कि जो कुछ भी सीखा है, वह निः स्वार्थ एवं समर्पित भाव से लोगों की सेवा करें जिससे आपके ज्ञान का लाभ उठाया जा सके।

उन्होनें इस अवसर पर सभी युवा, विधा उपासकों को साधुवाद दिया जिन्होनें इस विषय में स्नातक स्नातकोत्तर अथवा विद्या वाचस्वपति की परीक्षा में सफलता प्राप्त की उन्होनें सभी को प्रदीप्तमान भविष्य की कामना करते हुये, शुभाशीष एवं आयोजकों को बधाई।

कार्यक्रम के पूर्व, कुलाधिपति श्रीमती आनंदी बेन पटेल के आगमन पर कुलपति डॉ. पी.डी. जुयाल ने पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। राष्ट्रीय गीत के बाद परेड की सलामी लेने के बाद राज्यपाल महोदया ने मत्रोच्चारण के साथ गौ पूजन कर नानाजी देशमुख के तैल चित्र पर माल्यपर्ण कर वेशभूषा धारण कर दीक्षांत समारोह में शामिल हुई।

सरस्वती पूजन के साथ ही महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना के बाद दीक्षांत समारोह प्रारंभ्भ हुआ। कुलसचिव डॉ. एस.के. जोशी ने कुलाधिपति की अनुमति प्राप्त कर वि.वि. गीत, पंचम दीक्षांत समारोह की स्मारिका व विस्तार गतिविधियों की बुकलेट का विमोचन के उपरान्त कुलपति डॉ. पी.डी. जुयाल ने समस्त अतिथियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण दिया।

पंचम दीक्षांत समारोह 2019 में महामहिम कुलाधिपति द्वारा प्रख्यात विभूतियों क्रमशः डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक भती बोर्ड, नई–दिल्ली एवं डॉ. एम.सी. वार्ष्णेय, पूर्व कुलपति, आनंद पशु चिकित्सा विज्ञान वि.वि., आणंद एवं कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर (गुजराज) को मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम में जवाहर नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन, रानी दुर्गावती वि.वि. के कुलपति डॉ. कपिल देव मिश्र, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस चिकित्सा विज्ञान वि.वि., डॉ. आर.एस. शर्मा, पूर्व/संस्थापक कुलपति डॉ. जी.पी. मिश्रा सहित प्रबंध प्रमण्डल, शैक्षणिक, प्रशासनिक परिषद के सदस्यगण, वि.वि. के पूर्व अधिकारीगण, अधिकारी गण, वैज्ञानिकगण, शिक्षक, कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

नई परम्परा का शुभारंभ

राज्यपाल के निर्देान में नई परम्परा का शुभारंभ किया गया, जिसमें नन्हें मुन्ने बच्चों ने दीक्षांत समारोह को देखा तथा राज्यपाल महोदया ने उन्हें फल वितरित कर आशीष प्रदान किया। कार्यक्रम में मिलट्री बैण्ड एवं एस.ए.एफ. बैंड पार्टी द्वारा राष्ट्रगान धुन एवं बलिकाओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में वि.वि. परिवार के समस्त अधिकारियों, वैज्ञानिकों, प्राध्यापकों, छात्र–छात्राओं, प्रेस एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया का मागदर्शन एवं सहयोग सराहनीय रहा।